RAJHIN/2014/55262

sancharjagat.com

खबरों व विज्ञापन
के लिए सम्पर्क करें
संचार जगत
मो.नम्बर:- +917357161599

संचार जगत
दैनिक समाचार पत्र
sancharjagat.com
editorial@sancharjagat.com

'सोच को इतना बड़ा रखो कि असफलता भी एक छोटा कदम लगे। सफलता कोई मंजिल नहीं, यह एक दिशा है। बड़ा सोचो, बड़ा करो।'

वर्ष:13 | अंक: 284 जयपुर, मंगलवार, 17 नवम्बर 2026 मूल्य: 2.00 रूपए पृष्ठ : 4

▶ 48 सवाल पूछना चाहता है विपक्ष, सुप्रीम कोर्ट से मांगी इजाजत

चुनाव आयोग से होंगे तीखे सवाल, फॉर्म-6 किसने बदला, SIR का फैसला किसका

सभी 48 सवालों की सूची सुप्रीम कोर्ट को सौंपी, याचिका में आरोप-हलफनामे में वोट चोरी और एसआईआर से जुड़े किसी भी सवाल का चुनाव आयोग ने नहीं दिया है जवाब

नई दिल्ली/संचार जगत

इंडिया ब्लॉक के नेताओं ने सुप्रीम कोर्ट से मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार और दोनों आयुक्तों और आयोग के आईटी महानिदेशक से व्यक्तिगत रूप से पूछताछ करने की अनुमति मांगी है। इस बावत इंडिया ब्लॉक ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की है। कांग्रेस ने कहा है कि ये सवाल एसआईआर में हुई उन भारी खामियों के बारे में हैं, जिसके चलते कथित रूप से वोट चोरी का रास्ता खोला गया।



कांग्रेस ने कहा है कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार और दोनों आयुक्तों से पूछे जाने वाले अहम सवालों में चार महत्वपूर्ण हैं। इनमें कितने फैसलों पर मुख्य चुनाव आयुक्त की राय से दो अन्य चुनाव आयुक्त असहमत थे? पूरे देश में एसआईआर कराने का फैसला किसने लिया? फॉर्म 6 को बदलने का फैसला किसने लिया? और ERONET और ECINET को सेंट्रलाइज करने और वोटर लिस्ट को केंद्रीय नियंत्रण में रखने का फैसला किसका था? अपनी याचिका में में विपक्षी गठबंधन ने आयोग से पूछने के लिए कथित वोट चोरी और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) से जुड़े 48 बुनियादी सवाल पूछे हैं। याचिका में आरोप लगाया है कि निर्वाचन आयोग ने सुप्रीम कोर्ट में जो हलफनामा दाखिल किया है उसमें वोट चोरी और मतदाता सूची पुनरीक्षण से जुड़े किसी भी मुख्य सवाल का जवाब नहीं दिया गया है।

वोटर लिस्ट के डेटा तक किसकी थी पहुंच

विपक्ष ने मतदाता सूची के डिजिटल डेटाबेस की सुरक्षा और पारदर्शिता को लेकर भी सवाल उठाए हैं। इंडिया गठबंधन जानना चाहता है कि वोटर लिस्ट में नाम जोड़ने, हटाने, संशोधित करने या दोबारा बहाल करने का अधिकार किन अधिकारियों और संस्थाओं के पास था। इसके साथ ही यह भी पूछा गया है कि क्या निजी कंपनियों के कर्मचारियों या ठेकेदारों को मतदाता डेटा में बदलाव करने की विशेष अनुमति यानी राइट एक्सेस दी गई थी। इंडिया ब्लॉक का कहना है कि मतदाता सूची में होने वाले हर बदलाव का रिकॉर्ड सार्वजनिक जवाबदेही के लिहाज से बेहद जरूरी है। एसआईआर प्रक्रिया के दौरान नए मतदाताओं के पंजीकरण के लिए इस्तेमाल होने वाले फार्म-6 को लेकर भी विपक्ष ने सवाल किए हैं। आवेदन में ऑनलाइन फार्म-6 प्रक्रिया के तहत जोड़ी गई घोषणा और मैपिंग से संबंधित जानकारी मांगी गई है। विपक्ष जानना चाहता है कि घोषणा पत्र या जरूरी मैपिंग जानकारी जमा नहीं करने के कारण कितने आवेदन खारिज किए गए और कितने आवेदन लंबित रखे गए। इसके अलावा एसआईआर के दौरान कितने मतदाताओं के नाम सूची से हटाए गए, इसका आंकड़ा भी मांगा गया है।

आज सुप्रीम कोर्ट में होगी अहम सुनवाई

एसआईआर के खिलाफ दाखिल याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में मंगलवार 17 नवंबर को सुनवाई निर्धारित है। इससे पहले 27 अक्टूबर को मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली तीन जजों की पीठ ने याचिकाकर्ताओं को चुनाव आयोग के जवाबी हलफनामे पर अपना पक्ष रखने के लिए 10 दिनों का समय दिया था। चुनाव आयोग ने अपने जवाब में कहा था कि एसआईआर से जुड़े तीनों प्रमुख फैसले सर्वसम्मति से लिए गए थे। अब इंडिया गठबंधन के 48 सवालों और आयोग के जवाबों पर सुप्रीम कोर्ट में होने वाली सुनवाई पर सबकी नजरें टिकी हैं। पश्चिम बंगाल में एसआईआर से जुड़ी प्रक्रिया भी विपक्ष के सवालों के केंद्र में है। इंडिया गठबंधन ने उन मामलों का ब्योरा मांगा है, जिनमें न्यायिक अधिकारियों ने मतदाता सूची में नाम शामिल करने का आदेश दिया था और उसके खिलाफ चुनाव आयोग की ओर से अपील दाखिल की गई। विपक्ष जानना चाहता है कि ऐसी कुल कितनी अपीलें दायर की गईं, उन्हें दाखिल करने की मंजूरी किन अधिकारियों ने दी और किन मानदंडों के आधार पर मामलों का चयन किया गया।

सीजेआई सूर्यकांत से सुप्रीम कोर्ट में वकील बोला

आप इस कुर्सी पर बैठने के लायक नहीं हैं, आपमें कोई ईमानदारी नहीं

वकील को कोर्ट से किया बाहर, कार्यवाही को म्यूट किया गया

नई दिल्ली/संचार जगत

सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को एक बहुत ही अजीब स्थिति पैदा हो गई। एक वकील ने भारत के चीफ जस्टिस से कह दिया कि आप इस कुर्सी पर बैठने के लायक नहीं हैं। सीजेआई सूर्यकांत ने शालीनता से कहा कि वो उनके मामले को देखेंगे, लेकिन वकील इसके लिए तैयार नहीं हुआ।

जस्टिस वी मोहना ने वकील को टोका भी कि वो इस तरह से मेंशन नहीं कर सकते। वकील के रवैए को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने अदालत की कार्यवाही के ऑडियो-वीडियो को म्यूट कर दिया। बाद में अदालत में मौजूद वकीलों ने बताया कि उस वकील को कोर्ट से बाहर ले जाया गया। उसने कथित रूप से यह भी कहा कि वह बेंच में मौजूद जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस वी मोहना का सम्मान करता है, लेकिन सीजेआई सूर्यकांत को लेकर उसने नहीं लगता कि वह इस पद के लायक हैं। कोर्ट में मौजूद अन्य वकीलों ने कथित रूप से उस वकील के खिलाफ कड़ी कर्रवाई का अनुरोध किया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को सीजेआई सूर्यकांत की बेंच में बहुत ही हैरान कर देने वाली स्थिति पैदा हो गई। स्थिति को अप्रिय होते देख अदालत की कार्यवाही को म्यूट कर देना पड़ा। दरअसल, सीजेआई सूर्यकांत की बेंच के सामने पेश होकर एक वकील ने कहा कि वह एक अर्जेंट मामला मेंशन करना चाहते हैं और अदालत में अपने केस को मेंशन करने के तरीके पर खेद भी जताया। वकील ने सुप्रीम कोर्ट में सीजेआई की अगुवाई वाली बेंच से कहा, यह आइटम 2 नवंबर को मिस्टर जस्टिस (सूर्यकांत) के ऑफिस में दिया गया था। 15 दिनों बाद इन्होंने मुझे जवाब नहीं दिया है। इसलिए मैं इस कोर्ट के सामने आने को मजबूर हुआ हूं। इसपर जस्टिस वी मोहना ने वकील को टोकते हुए कहा, आप कोई चीज इस तरह से मेंशन नहीं कर सकते।



सुप्रीम कोर्ट में पहले भी हो चुकी है ऐसी अप्रिय घटना

इसी साल जुलाई में सीजेआई सूर्यकांत की बेंच में ही इसी तरह की एक और घटना घटी थी। तब प्रबल प्रताप नाम का शख्स खुद ही याचिकाकर्ता बनकर पेश हुआ और सीजेआई सूर्यकांत के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी की। हालांकि, बेंच ने उसे मानसिक रूप से परेशान मानकर उसके खिलाफ अवमानना की कार्यवाही शुरू करने से मना कर दिया। इसके बाद से सुप्रीम कोर्ट में यह व्यवस्था शुरू हुई कि जब भी खुद याचिकाकर्ता अपने मामले की पैरवी करने के लिए पहुंचता है तो अदालत की कार्यवाही का ऑडियो-वीडियो प्रसारण बंद कर दिया जाता है। इससे पहले पिछले साल सीजेआई सूर्यकांत के कार्यभार संभालने से कुछ समय पहले (अक्टूबर, 2025) में राकेश किशोर नाम के एक 71 वर्षीय बुजुर्ग वकील ने तत्कालीन सीजेआई बीआर गवई की ओर अपना जूता फेंकने की कोशिश की थी। वह कथित रूप से मध्य प्रदेश के खजुराहो मंदिर में भगवान विष्णु की खंडित प्रतिमा की बहाली पर जस्टिस गवई के टिप्पणी से नाराज बताया गया था।

लश्कर का आतंकी कमांडर लतीफ भट एनकाउंटर में ढेर

सीआरपीएफ पर हमले का था मास्टरमाइंड, एक साथी भी मारा गया



नई दिल्ली/संचार जगत

जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में बड़ा एनकाउंटर हुआ है। इसमें लश्कर के आतंकी कमांडर लतीफ भट को सुरक्षा बलों ने ढेर कर दिया है। इसमें उसका एक साथी भी मारा गया है।

लतीफ भट पिछले दिनों सीआरपीएफ पर हुए हमले और मजदूरों की टारगेट किलिंग का मास्टरमाइंड था। उसे मारा जाना सुरक्षा बलों के लिए बड़ी कामयाबी है। बीते कई दिनों से उसकी तलाश में सर्च ऑपरेशन चल रहा था।

अब्दुल लतीफ भट के आतंकवाद से जुड़ने की कहानी भी चर्चा में रही है। 22 साल का लतीफ कभी कारपेंटर का काम करता था, लेकिन फिर आतंकी संगठन का हिस्सा बन गया। सुरक्षा बलों के अनुसार वह कश्मीर घाटी का इकलौता सक्रिय आतंकवादी था, जो स्थानीय मूल का था। उस पर 15 लाख रुपये का इनाम घोषित किया गया था। वह कुलगाम जिले के ही एक गांव का रहने वाला था। उसने 12वीं तक की पढ़ाई के बाद कॉलेज में एडमिशन लिया था, लेकिन पढ़ाई छोड़ दी। इसके बाद वह एक जगह पर कारपेंटर के तौर पर काम करने लगा था। वह 19 नवंबर 2025 को अपना घर से लापता हो गया था।

लंबे समय से थी लतीफ की तलाश

लतीफ भट सुरक्षा बलों की हाई प्रोफाइल लिस्ट में शामिल था। पुलिस और सुरक्षा बलों को उसकी कई मामलों में लाश थी। वह अनंतनाग में सुरक्षा बलों पर हमले का आरोपी था। सुरक्षा बलों ने उसकी कई बार घेरेबंदी की थी, लेकिन वह बच निकलता था। आखिरी बार दिसंबर 2025 में अनंतनाग में वह एक एनकाउंटर में बचकर भाग गया था। हिजबुल के आतंकी बुरहान वानी के बाद अब्दुल लतीफ भट एक ऐसा नया युवा आतंकी था, जो बीते कुछ समय में दहशतगर्दी का पोस्टरबॉय बन गया था।

बुलेटप्रूफ केबिन बनवा लो, फिर भी मारेंगे गोली

गैंगस्टर गोल्डी ढिल्लों की अमिताभ-अभिषेक को धमकी

नई दिल्ली/संचार जगत

पोस्ट में लिखा, 1984 के सिख विरोधी दंगों के दोषियों को माफ नहीं करेंगे

गैंगस्टर गोल्डी ढिल्लों ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर कर बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन और उनके बेटे अभिषेक बच्चन को जान से मारने की धमकी दी है। पोस्ट में गोल्डी ने 1984 के सिख विरोधी दंगों का जिक्र करते हुए कहा कि उन घटनाओं के दोषियों को कभी माफ नहीं किया जाएगा। गोल्डी ढिल्लों ने अपनी पोस्ट की शुरुआत वाहेगुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह से की। उसने लिखा, मुंबई में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने हमारे दो साथियों विकास ठाकुर और दीपक सिंह को गिरफ्तार किया है।

अमिताभ पर नारे लगाने के आरोप

अमिताभ बच्चन पर 1984 के सिख-विरोधी दंगों के दौरान हिंसा भड़काने वाले नारे लगाने के आरोप पहले भी लग चुके हैं। हालांकि, अभिनेता इन आरोपों से इनकार कर चुके हैं। साल 2011 में उन्होंने अकाल तख्त को पत्र लिखकर इन आरोपों को गलत बताया था।

भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में राजस्थान मंडप का हुआ उद्घाटन



संचार जगत

जयपुर। नई दिल्ली के प्रगति मैदान में शुरू हुए 15 दिवसीय भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में राज्य के प्रमुख आवासीय आयुक्त रोहित कुमार ने राजस्थान मंडप का विधिवत रूप से दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। इस अवसर पर रोहित कुमार ने मंडप का अवलोकन किया और इसके बारे में जानकारी ली।

इस वर्ष राजस्थान पार्टनर स्टेट है और राजस्थान मण्डप को विकास और विरासत की थीम के अनुरूप तैयार किया गया है। रोहित कुमार ने राजस्थान मण्डप के सभी स्टॉल का अवलोकन कर राजस्थानी कलाकारों और हुनरबंद कारीगरों का उत्साह बढ़ाया। इसमें राजस्थान की औद्योगिक प्रगति, सांस्कृतिक विविधता, कला, शिल्प, पर्यटन और निवेश की संभावनाओं की विशिष्ट झलक देखने को मिल रही है।

अगर चर्च में नाच सकते हैं तो बार में क्यों नहीं

तिरुवनंतपुरम, आरएनएन। केरल हाई कोर्ट ने सोमवार को सवाल उठाया कि पुलिस किस आधार पर राज्य में डीजे पार्टियों और नाइटलाइफ को निशाना बना रही है। अदालत ने कहा कि सिर्फ संगीत पर नाचने को नशे के सेवन

केरल हाईकोर्ट ने पुलिस से किए तीखे सवाल

से जोड़कर नहीं देखा जा सकता और पुलिसिंग पूर्वाग्रहों या रूढ़ धारणाओं के आधार पर नहीं होनी चाहिए। जस्टिस देवन रामचंद्रन और जस्टिस बसंत बालाजी की डिवीजन बेंच राज्य सरकार की उस अपील पर सुनवाई कर रही थी, जो सिंगल जज के आदेश के खिलाफ दायर की गई थी। जज ने कोच्चि के एक होटल में देर रात होने वाले डीजे कार्यक्रमों पर रोक लगाने वाले पुलिस के नोटिसों को रद्द कर दिया था। होटल के पास एक्साइज डिपार्टमेंट से रात 3 बजे तक बार चलाने का लाइसेंस है। होटल ने पुलिस की ओर से लगाई गई पाबंदियों को चुनौती दी थी।

खराब ब्रेक के साथ 463 किमी तक दौड़ी वंदे भारत

नई दिल्ली, आरएनएन। वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें भारत की सबसे प्रीमियम ट्रेनों में शुमार है लेकिन अगर उस ट्रेन के साथ भी लापरवाही होगी तो रेलवे की साख पर बट्टा लगेगा। कुछ वैसा ही वाकया एक वंदे भारत ट्रेन के

अधिकारियों ने नहीं दिया ध्यान, अब होगी जांच

साथ हुआ है क्योंकि अक्टूबर में कथित तौर पर एक खराब ब्रेकिंग सिस्टम वाली वंदे भारत ट्रेन झारखंड से यूपी के झांसी तक चली गई लेकिन अधिकारियों ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रेन चला रहे लोकों पायलटों ने एक नहीं बल्कि कई बार अलग-अलग स्टेशनों पर कमजोर ब्रेकिंग सिस्टम की शिकायत की, लेकिन इस पर किसी का कोई ध्यान ही नहीं गया।

आत्मकथा सोनिया बोलीं, भारत में उनके लिए कुछ चीजें शॉकिंग थी तो कुछ चीजें उन्हें समझ में ही नहीं आती थी

राहुल के नामकरण पर इंदिरा से अलग थी सोनिया की राय

नई दिल्ली/संचार जगत

सोनिया गांधी की किताब बिलॉन्गिंग अ जर्नी ऑफ लव आधिकॉरिक रूप से लॉन्च

सोनिया गांधी की चर्चित किताब बिलॉन्गिंग अ जर्नी ऑफ लव को सोमवार को दिल्ली में आधिकॉरिक रूप से लॉन्च किया गया। इस मौके पर सोनिया ने अपनी जिंदगी के अनछुए पहलुओं पर खुलकर बात की। सोनिया ने अपनी किताब में काफी डिटेल से घटनाओं का वर्णन किया है, इससे लगता है कि सोनिया अपने साथ गुजरने वाली घटनाओं और परिस्थितियों का रिकॉर्ड रखती थी। लेकिन सोनिया ने कहा कि वे किसी तरह की डायरी नहीं रखती थीं।

सोनिया ने राहुल गांधी के नामकरण को याद करते हुए कहा कि राहुल के जन्म के एक साल बाद नामकरण हो रहा था। मेरी सास के हाथ सबकुछ था। वे सभी चीजें आर्गनाइज कर रही थीं। लेकिन मुझे भारत में नामकरण परंपरा के बारे में पता नहीं था। इंदिरा जी पंडित बुलाकर नाम रखना चाहती थीं। मैं कह रही थी कि हमारे बच्चे का नाम रखना है तो इसके लिए पंडित क्यों जरूरी है। वो मेरा भी बेटा है, वो सिर्फ आपका पोता नहीं है, लेकिन इंडियन फैमिली में जब आप आते हैं तो उसी के होकर रह जाते हैं। बस... इसके बाद मेरी सास के साथ मेरा आर्गुमेंट हुआ, उसके बाद उन्होंने मुझे कहा- सॉरी।



राहुल-प्रियंका की वजह से किताब लिखी

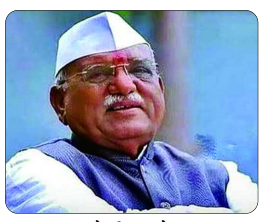
सोनिया ने कहा, मैं हमेशा से अपने अंदर की भावनाओं और चीजों, लोगों और जगहों के बारे में जो महसूस करती हूं, उसे जाहिर करने में बहुत हिचकिचाती रही हूं। इसलिए, मैंने इसे एक तरह से नजरअंदाज कर दिया। लेकिन फिर, धीरे-धीरे, राहुल और प्रियंका दोनों के और मेरी एक प्यारी दोस्त मंजूलिका दुबे के जोर देने पर, मैं किताब लिखने के लिए मान गई।

इंदिरा जी को शुरुआत में मां कहना मुश्किल था...

कांग्रेस नेता ने अपने जीवन के पन्ने को उलटते हुए कहा कि हां मैं इंदिरा से डरी रहती थी। मुझे समझ में नहीं आता था कि मैं उनसे कैसे बात करूं। मेरे पति और संजय उन्हें मां कहते थे, मुझे भी इंदिरा जी को मां या मम्मी कहना था। ये एक ऐसी चीज थी जिसे मैं कतई नहीं करने वाली थी। क्योंकि मेरे लिए मेरी एक ही मां थी, मेरी इटालियन मां। और मैं उन्हें मां नहीं कहने वाली थी। इसलिए मैं कोशिश करती थी कि मुझे उन्हें सीधे एप्रोच नहीं करना पड़ा। लेकिन धीरे-धीरे चीजें सामान्य हुईं। सोनिया ने कहा कि जब इंदिरा जी को गुस्सा आता था तो मुझे अपने पिता की याद आ जाती थी। मैं फ्रीज हो जाती थी। तब राजीव और संजय चुप हो जाते थे और तूफान के शांत हो जाने का इंतजार करते थे। कांग्रेस नेता ने कहा कि राजीव का भी गुस्सा काफी बुरा होता था, उन्हें गुस्सा कभी कभार आता था, लेकिन जब आता था तो काफी बुरा होता था।

राज्यपाल ने भारतीय महिला टीम को दी बधाई

संचार जगत



जयपुर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने मलेशिया के कुआलालंपुर में आयोजित दक्षिण-पूर्व एशियाई लैक्रोस चैंपियनशिप-2026 में भारतीय महिला टीम द्वारा कांस्य पदक जीतने पर बधाई और शुभकामनाएं दी है। राज्यपाल ने इस टीम में राजस्थान सहित देश के विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों की प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि इससे पूरा देश गौरवान्वित हुआ है। उन्होंने कहा कि जनजातीय युवाओं की प्रतिभा एवं परिश्रम से राष्ट्र का मान बढ़ा है। उल्लेखनीय है कि राज्यपाल बागडे ने लैक्रोस खेलों से जुड़ी जनजातीय प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। इसी आलोक में उन्होंने लोकभवन में इन खेलों से जुड़ी आदिवासी बालिकाओ से संवाद कर उन्हें आर्थिक सहायता देने के साथ निरंतर प्रोत्साहित किया है।

संपादकीय

राजनीति की केंद्रीय धुरी बनता

स्वाधीनता के बाद से ही भारतीय राजनीति में एक धारा ऐसी रही, जिसका सपना राजनीति के केंद्र में हिंदुत्व लाना रहा। भाजपा के राष्ट्रीय उभार के बाद यह सपना पूरा हुआ। इसके बावजूद राजनीति का बड़ा हिस्सा अब भी सेक्युलरवादी खोल में अल्पसंख्यकवाद केंद्रित राजनीति ही करता है। इसी कारण सेक्युलरिज्म को छद्म सेक्युलरिज्म की संज्ञा मिली। यदि सेक्युलर राजनीति का कोई पैरोकार राम मंदिर जाने की घोषणा करे तो यह मामूली बात नहीं। सपा प्रमुख अखिलेश यादव का 12 दिसंबर को राम मंदिर में दर्शन करने जाना राजनीति में आ रहे बदलाव का प्रतीक है। अखिलेश जिस राजनीतिक धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसकी न तो राम मंदिर निर्माण में भागीदारी रही, न ही वह अयोध्या ढांचा ध्वंस को स्वीकार करती है। फिर भी वे राम मंदिर जा रहे हैं तो इसका अर्थ है कि अब उन्हें भी अपने राजनीतिक अस्तित्व के लिए हिंदुत्ववादी राजनीति जरूरी लगने लगी है।

आज हिंदुत्व की राजनीति का प्रमुख चेहरा भाजपा है, पर स्वाधीनता के बाद की राजनीति में हिंदुत्ववादी राजनीति का चेहरा हिंदू महासभा और स्वामी करपात्री जी की रामराज्य परिषद थी। भाजपा का पूर्ववर्ती संस्करण जनसंघ भी इसी राजनीति की कड़ी रहा। ये दल सेक्युलरिज्म के नाम पर हिंदू समाज के अधिकारों, परंपराओं और मान्यताओं की उपेक्षा करने की तत्कालीन राजनीति के विरोधी रहे। हिंदुत्ववादी धारा की राजनीति सेक्युलरिज्म के बहाने अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की राजनीति का विरोध करती थी। हालांकि तत्कालीन राजनीति ने तुष्टीकरण के विरोध को अल्पसंख्यक विरोध के रूप में प्रचारित किया। बाद में सेक्युलरवाद ऐसा फैशन बना, जहां हिंदू परंपराओं-मान्यताओं को रूढ़िवादी बताना प्रगतिशीलता मान लिया गया।

वर्ष 2014 में हुए आम चुनाव के बाद मोदी और भाजपा के उभार का बड़ा कारण हिंदुत्व की राजनीति भी रही, पर इसे राजनीति की धुरी मानने से राजनीति के बड़े हिस्से को परहेज रहा। तमाम सेक्युलरवादी दलों को भाजपा का यह उभार तात्कालिक लगा और उन्होंने माना कि यह उभार कुछ ही दिनों का मेहमान है, पर तेलंगाना, तमिलनाडु, केरलम जैसे कुछ राज्यों को छोड़ दें तो भाजपा के नेतृत्व में हिंदुत्व की राजनीति गहरा असर दिखाती रही। इसे रोकने में जब भाजपा विरोधी दल नाकाम रहे तो उन्हें मजबूरी में ही सही, हिंदुत्व का खुले-छिपे रूप में सहारा लेना पड़ा। जैसे 2017 के गुजरात और 2018 के कर्नाटक चुनावों के समय राहुल गांधी जनेऊ पहनकर मंदिर-मंदिर गए। गुजरात में वे नाकाम रहे, कर्नाटक में कामयाब। इसके बाद राहुल फिर छद्म सेक्युलरवादी धारा की ओर लौट पड़े।

मुलायम सिंह जब पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने, तब भाजपा उनका समर्थन कर रही थी। बाद में उनकी पूरी राजनीति भाजपा विरोधी की रही। 1990 में जब लालकृष्ण आडवाणी ने राम मंदिर के समर्थन में रथयात्रा शुरू की तो जनता दल के क्षत्रपों और खासकर मुलायम सिंह और लालू यादव में आडवाणी को गिरफ्तार कर मुस्लिम समुदाय का हीरो बनने की होड़ लगी। लालू यादव ने आडवाणी को समस्तीपुर में गिरफ्तार करा दिया।

माइक्रोसॉफ्ट मामले से सबक ले विश्व

आखिरकार इंजीनियरों को सिस्टम धीरे-धीरे, लगभग एक-एक हिस्सा करके और हर कदम की जांच करते हुए ठीक करना पड़ा। कंपनी के बाहर के कुछ इंजीनियरों का मानना है कि कोड में कोई खामी वर्षों से दबी पड़ी थी और हाल के बदलाव ने उसे उजागर कर दिया। इसकी असली वजह जो भी हो, ऐसे सिस्टम को फिर से खड़ा करना लोगों पर निर्भर करता है। खास तौर पर उन लोगों पर, जो जानते हैं कि एक पुराना और व्यापक सिस्टम वास्तव में कैसे जुड़ा है। यह जानकारी न तो जल्दबाजी में भर्ती करके हासिल की जा सकती है, न ही एआइ से जेनरेट की जा सकती है। कंपनी में पुराने नेटवर्क को जानने वाले कम हो गए हैं। यह उन फैसलों का नतीजा है, जो कहीं ऊपर लिए गए।



हाल में माइक्रोसॉफ्ट की सेवाओं में तकनीकी खराबी यानी आउटेज ने भारत समेत दुनिया के 74 देशों में करोड़ों लोगों की मुश्किलें बढ़ा दीं। इस गड़बड़ी से माइक्रोसॉफ्ट 365, आउटलुक, टीम्स और कोपायलट जैसी लोकप्रिय सेवाएं ठप हो गईं। इसका असर आम यूजर तक सीमित नहीं रहा, बल्कि एयरलाइंस, अस्पतालों, बैंकों, सरकारी दफ्तरों और अदालतों का कामकाज भी प्रभावित हुआ। करीब 16 घंटे से अधिक समय तक सेवाओं में बाधा बनी रही। कुछ असहज करने वाली खबरें आने लगीं। जैसे-ब्रिटेन के कुछ अस्पतालों ने नियमित अपाइंटमेंट रद कर दिए और कागज पर लौट आए, क्योंकि उनके शेड्यूल आउटलुक में ही थे। डाक्टर प्रिस्क्रिप्शन के अनुरोध नहीं देख पा रहे थे। पुलिस बलों ने लोगों से अपराध की सूचना फोन पर देने को कहा, क्योंकि आनलाइन फार्म काम करना बंद कर चुके थे। जापान के एक मंत्रालय के अधिकारियों ने काम जारी रखने के लिए दस्तावेज प्रिंट किए। अमेरिका के कोलोराडो के एक शहर में जमानत के भुगतान अटक गए।

हमारे यहां भी विमान कंपनियों ने यात्रियों को चेताया कि उनका ईमेल सपोर्ट प्रभावित है और एक टेलीकाम आपरेटर के काल सेंटरों पर काल की बाढ़ आ गई। कुछ ट्रेडर्स ने सौदों की पुष्टि फोन-फैक्स से की। माइक्रोसॉफ्ट ने कहा कि यह गड़बड़ी नेटवर्क क्षमता बढ़ाने के लिए किए गए एक अपग्रेड से आई। कंपनी ने यह भी स्पष्ट किया कि इसका हैकरों या एआइ से कोई लेना-देना नहीं था। यह बात भी चिंतित करने वाली है। दुश्मन सरकारें इतनी बड़ी व्यवस्थाओं को ठप करने की कोशिश में वर्षों लगाती हैं और भारी पैसा खर्च करती हैं, फिर भी ज्यादातर नाकाम रहती हैं। इस बार किसी को कोशिश ही नहीं करनी पड़ी। एक मामूली मेंटेनेंस के काम ने यह कर दिया। इसके अगले ही दिन नेटवर्क में आई खराबी ने अमेरिका में चार घंटे से अधिक समय तक हजारों उड़ानों को रोक दिया। इसमें भी कोई बाहरी हमलावर नहीं था। दो दिनों की ये विफलताएं एक ही दिशा में इशारा करती हैं। आजकल हमारी सबसे बड़ी व्यवस्थाओं को बाहरी हमले की तुलना में रोजमर्रा के कामकाज के दौरान अंदर से फेल होने की आशंका कहीं अधिक है।

जब कुछ सर्वर बंद हुए, तो उनका ट्रैफिक बाकी सर्वरों पर लद गया और फिर वे भी ठप हो गए। माइक्रोसॉफ्ट ने माना कि उसने जिन सर्वरों को दोबारा चालू किया, उनमें से कुछ ट्रैफिक लौटते ही फिर से ठप हो गए। उसके शुरुआती सुधार काम नहीं आए। आखिरकार इंजीनियरों को सिस्टम धीरे-धीरे, लगभग एक-एक हिस्सा करके और हर कदम की जांच करते हुए ठीक करना पड़ा। कंपनी के बाहर के कुछ इंजीनियरों का मानना है कि कोड में कोई खामी वर्षों से दबी पड़ी थी और हाल के बदलाव ने उसे उजागर कर दिया। इसकी असली वजह जो भी हो, ऐसे सिस्टम को फिर से खड़ा करना लोगों पर निर्भर करता है। खास तौर पर उन लोगों पर, जो जानते हैं कि एक पुराना और व्यापक सिस्टम वास्तव में कैसे जुड़ा है। यह जानकारी न तो जल्दबाजी में भर्ती करके हासिल की जा सकती है, न ही एआइ से जेनरेट की जा सकती है। कंपनी में पुराने नेटवर्क को जानने वाले कम हो गए हैं। यह उन फैसलों का नतीजा है, जो कहीं ऊपर लिए गए। सत्या नडेला कह चुके हैं कि कंपनी के कुछ प्रोजेक्ट्स में एआइ पहले से ही कोड का अच्छा-खासा हिस्सा लिख रहा है। माइक्रोसॉफ्ट इस साल लगभग 175 अरब डालर खर्च करने की उम्मीद कर रहा है, जिसका ज्यादातर हिस्सा एआइ इन्फ्रास्ट्रक्चर पर जाएगा। इस साल की शुरुआत में उसने लगभग 9,000 अमेरिकी कर्मचारियों को बायआउट की पेशकश की, फिर जुलाई में 4,800 नौकरियां घटाईं और आउटेज से मुश्किल से दो हफ्ते पहले लगभग 60,000 लोगों यानी वहां काम करने वाले हर चार में से एक से भी अधिक कर्मचारी को स्वैच्छिक विदाई की पेशकश की। सवाल है कि क्या इसकी वजह से माइक्रोसॉफ्ट ग्राहक खोएगी? निश्चित रूप से नहीं। किसी बड़े संगठन को आउटलुक और टीम्स से हटाने में एक साल, बहुत सारी री-ट्रेनिंग और भारी-भरकम कंसल्टिंग बिल लगता है। कोई भी एक दिन की परेशानी के कारण यह सब मोल नहीं लेगा। माइक्रोसॉफ्ट यह जानती है। जब ग्राहक सचमुच छोड़कर जा ही नहीं सकते, तो वह इस आउटेज को शायद ही गंभीरता से ले। यह काम किसी और को करना होगा। 2008 के बाद हमने तय किया कि बैंकों की बातों पर आंख मूंदकर भरोसा नहीं किया जा सकता। आज गिनी-चुनी क्लाउड और साफ्टवेयर कंपनियां सभी अस्पतालों, अदालतों, संसदों, एयरलाइंस और स्टाक एक्सचेंजों का बोझ उठा रही हैं। उनकी भी उतनी ही कड़ी जांच होनी चाहिए। अगले बड़े आउटेज से पहले। उन्हें यह साबित करना चाहिए कि वे किसी खराबी से कुछ घंटों में उबर सकती हैं। भारत को इसके लिए दबाव बनाना चाहिए। हमारे मंत्रालय, बैंक, आइटी कंपनियां और एयरलाइंस इन्हीं गिनी-चुनी कंपनियों पर निर्भर हैं। रिजर्व बैंक बैंकों से अपेक्षा करता है कि वे किसी अहम वेंडर के ठप होने की स्थिति के लिए वैकल्पिक योजना बनाकर रखें। अब यह सोच बैंकिंग से आगे भी जाना चाहिए। बड़े खरीदार भी बहुत कुछ कर सकते हैं। उन्हें अनुबंधों में रिकवरी ड्रिल, स्वतंत्र आडिट और जुर्माने का प्रविधान शामिल करना चाहिए।

खेल विशेष...

राष्ट्रीय खेल दिवस



मैदान से मेडल तक, हर जीत के पीछे अनगिनत संघर्ष

खेल केवल पदक जीतने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि खेल उस अनुशासन का नाम है, जो हार के बाद फिर खड़े होना सिखाता है। मैदान में खिलाड़ी कुछ मिनटों या घंटों के लिए दिखाई देता है, लेकिन उसकी उपलब्धि के पीछे वर्षों का अभ्यास, त्याग, चोट, असफलताएं और अनगिनत सुबहें छिपी होती हैं। राष्ट्रीय खेल दिवस इसी अदृश्य संघर्ष को पहचानने का अवसर है।

ध्यानचंद को समर्पित दिन

29 अगस्त को मनाया जाने वाला राष्ट्रीय खेल दिवस महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती को समर्पित है। भारतीय हॉकी के स्वर्णिम दौर के इस नायक को 'हॉकी का जादूगर' कहा गया। उनकी उपलब्धियां बताती हैं कि खेल प्रतिभा को जब अनुशासन और समर्पण का साथ मिलता है, तो वह देश की पहचान बन जाती है।

अब बेटियां बदल रही हैं तस्वीर

खेल मैदानों में बेटियों की बढ़ती मौजूदगी सामाजिक बदलाव की मजबूत तस्वीर है। जिन परिवारों में कभी लड़कियों के खेल को समय की बर्बादी समझा जाता था, वहीं आज बेटियां अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। उनकी सफलता अगली पीढ़ी के लिए रास्ता खोल रही है। फिर भी समान अवसर, सुरक्षित वातावरण और बेहतर प्रशिक्षण की जरूरत बनी हुई है।

क्रिकेट से आगे बढ़ता खेल भारत

क्रिकेट की लोकप्रियता भारत में बेजोड़ है, लेकिन भारतीय खेल की कहानी अब इससे कहीं बड़ी हो चुकी है। बैडमिंटन, कुश्ती, मुक्केबाजी, निशानेबाजी, एथलेटिक्स और टेबल टेनिस जैसे खेलों में खिलाड़ियों ने विश्व मंच पर अपनी छाप छोड़ी है। बदलता भारत अब खेलों को मनोरंजन भर नहीं, संभावनाओं और करियर के क्षेत्र के रूप में भी देखने लगा है।

मैदान और कोच भी चाहिए

प्रतिभा को केवल जुनून के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। अच्छे मैदान, आधुनिक उपकरण, प्रशिक्षित कोच, पोषण, खेल विज्ञान और चिकित्सा सहायता खेल विकास की बुनियादी जरूरतें हैं। खासकर ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में इन सुविधाओं की पहुंच बढ़ाना जरूरी है। तभी देश के हर हिस्से से प्रतिभाएं सामने आएंगी।

छोटे शहरों से बड़े सपने

भारत की खेल प्रतिभा महानगरों तक सीमित नहीं। गांवों और छोटे शहरों की साधारण पृष्ठभूमि से निकलकर खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान बना रहे हैं। कई प्रतिभाओं की शुरुआत सीमित संसाधनों और स्थानीय मैदानों से होती है। सही कोच, सुविधा और अवसर मिल जाए तो यही प्रतिभा देश के लिए पदक जीत सकती है।

आर्थिक सहायता की आवश्यकता

हर खिलाड़ी का सफर समान नहीं होता। महंगे उपकरण, प्रशिक्षण, यात्रा, पौष्टिक भोजन और प्रतियोगिताओं का खर्च आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए बड़ी चुनौती है। कई सपने प्रतिभा की कमी से नहीं, संसाधनों की कमी से रुक जाते हैं। इसलिए छात्रवृत्ति और आर्थिक सहायता की मजबूत व्यवस्था जरूरी है, ताकि प्रतिभा का भविष्य परिवार की आर्थिक स्थिति तय न करे।

दिव्यांगता नहीं, दृढ़ता बनी पहचान

पैरा-स्पोर्ट्स के खिलाड़ियों ने खेल की परिभाषा को और व्यापक बनाया है। शारीरिक चुनौतियों के बावजूद उनकी अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियां केवल पदक नहीं, हौसले और आत्मविश्वास की जीत हैं। खेलों को वास्तव में समावेशी बनाने के लिए दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए सुलभ मैदान, उपकरण, प्रशिक्षण और समान अवसर जरूरी हैं।

राष्ट्रीय खेल दिवस का असली अर्थ

राष्ट्रीय खेल दिवस सिर्फ ध्यानचंद को याद करने का दिन नहीं, बल्कि यह पूछने का अवसर है कि हम खेलों को कितना महत्व देते हैं। क्रिकेट अपनी जगह लोकप्रिय रहेगा, लेकिन भारत की खेल पहचान अनेक खेलों और लाखों सपनों से बनती है। पदक उसकी चमक है, मगर उसके पीछे का संघर्ष ही खेल की असली कहानी है।

कहां खो गए बचपन के वो खेल?

कंचे, गिल्ली-डंडा, पिट्ठू जैसे खेलों का बदलता संसार



समय बदला तो परंपरा भी बदली। कभी बच्चे घर के आसपास या मैदानों में परंपरागत खेल खेलते थे, जिनकी जगह अब सोशल मीडिया और मोबाइल गेम्स ने ले ली है। एक समय था जब शाम होते ही मोहल्लों की गलियां बच्चों की आवाजों से भर जाती थीं। कहीं कंचों की खनक सुनाई देती थी, कहीं गिल्ली-डंडे के लिए जगह तलाशते बच्चे नजर आते थे और कहीं पिट्ठू की गेंद के पीछे दौड़ती टोली। इन खेलों के लिए न महंगे खिलौनों की जरूरत थी, न किसी विशेष मैदान की। थोड़ी-सी जगह, कुछ दोस्त और खूब सारी कल्पना ही इनके लिए काफी थी। आज वही खेल धीरे-धीरे हमारी यादों और किस्सों तक सीमित होते जा रहे हैं।

जगह की कमी भी बड़ी वजह

शहरी जीवन ने बच्चों के खेल के लिए उपलब्ध खुली जगह को लगातार कम किया है। तेजी से बढ़ते अपार्टमेंट, पार्किंग क्षेत्र, यातायात और निर्माण गतिविधियों के बीच गलियां पहले जैसी सुरक्षित नहीं रहीं। गिल्ली-डंडा या पिट्ठू जैसे खेलों के लिए थोड़ी खुली जगह जरूरी होती है, लेकिन आज कई बच्चों के पास खेलने के लिए सुरक्षित मैदान तक आसानी से उपलब्ध नहीं है। परिणामस्वरूप खेल की संस्कृति भी बदल गई है।

वापसी की छोटी-सी कोशिश

इन खेलों को बचाने के लिए बड़े प्रयासों की जरूरत नहीं है। स्कूलों में पारंपरिक खेल दिवस आयोजित किए जा सकते हैं। सोसायटियों और पार्कों में सप्ताहांत पर बच्चों के लिए कंचे, पिट्ठू, गिल्ली-डंडा जैसे खेलों की गतिविधियां कराई जा सकती हैं। सबसे जरूरी है कि अभिभावक बच्चों को कुछ समय बिना स्क्रीन के खुले वातावरण में खेलने दें।

मोबाइल ने बदल दिया खेल का मैदान

बचपन के खेलों के बदलने का सबसे बड़ा कारण डिजिटल दुनिया का विस्तार है। स्मार्टफोन, ऑनलाइन गेम, वीडियो और सोशल मीडिया ने बच्चों के खाली समय को घर के भीतर बांध दिया है। स्क्रीन पर मिलने वाला तुरंत मनोरंजन पारंपरिक खेलों की तुलना में अधिक आकर्षक लगता है। खेल अब गली में दोस्तों के साथ खेलने की गतिविधि कम और मोबाइल स्क्रीन पर अकेले बिताया जाने वाला समय अधिक बनता जा रहा है।

पढ़ाई और प्रतियोगिता का दबाव

आज बच्चों का दिन स्कूल, होमवर्क, कोचिंग और विभिन्न गतिविधियों में बंटा हुआ है। अभिभावकों की अपेक्षाएं भी बढ़ी हैं। खेल का मतलब अक्सर क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन या किसी संगठित स्पोर्ट्स क्लास से जोड़कर देखा जाता है। कंचे या गिल्ली-डंडे जैसे खेलों को कई बार समय की बर्बादी समझ लिया जाता है, जबकि वे बच्चों में एकाग्रता, संतुलन, रणनीति और आपसी सहयोग जैसी क्षमताएं विकसित करते थे।

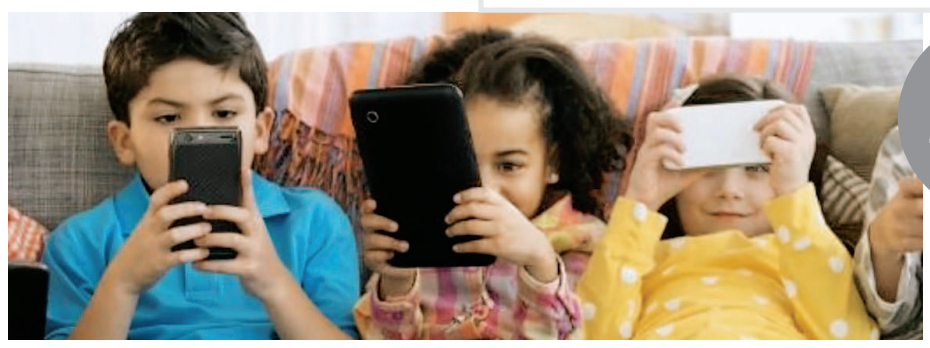
सिर्फ खेल नहीं, हमारी स्मृतियां भी

कंचे, गिल्ली-डंडा और पिट्ठू केवल मनोरंजन के साधन नहीं थे। इनके साथ स्थानीय भाषा, मोहल्ले की दोस्ती, मौसम, मिट्टी और सामूहिक बचपन की स्मृतियां जुड़ी थीं। इन खेलों का गायब होना एक सांस्कृतिक बदलाव भी है। जब बच्चे इन खेलों से दूर होते हैं तो वे अपने माता-पिता और दादा-दादी के बचपन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण कड़ी भी खो देते हैं।



बचपन को फिर से मैदान चाहिए

तकनीक बच्चों के जीवन का हिस्सा रहेगी और उसे पूरी तरह रोकना न संभव है, न जरूरी। लेकिन स्क्रीन और मैदान के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। पुराने खेलों को वापस लाना केवल परंपरा बचाना नहीं, बल्कि बच्चों को शारीरिक सक्रियता, दोस्ती, रचनात्मकता और सामूहिकता का अनुभव देना भी है। शायद जरूरत सिर्फ इतनी है कि किसी शाम मोबाइल एक तरफ रखकर बच्चे फिर से पूछें 'कौन खेलेगा पिट्ठू?'।



खेलों में छिपी थी सामाजिकता

पारंपरिक खेलों की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वे बच्चों को एक-दूसरे के करीब लाते थे। जीत-हार के साथ नियम बनाना, अपनी बारी का इंतजार करना, विवाद सुलझाना और मिलकर खेलना सामाजिक व्यवहार का स्वाभाविक प्रशिक्षण था। कंचों में निशाने की सटीकता, गिल्ली-डंडे में हाथ-आंख का तालमेल और पिट्ठू में टीमवर्क बच्चों को बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के बहुत कुछ सिखाते थे।

राजस्थान पत्रकार परिषद का दीपावली स्नेह मिलन समारोह आयोजित

संचार जगत



जयपुर। विद्याधर नगर में राजस्थान पत्रकार परिषद का दीपावली स्नेह मिलन और सम्मान समारोह आयोजित किया गया। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने दीप प्रज्ज्वलन कर समारोह को शुभारम्भ किया। इस मौके पर उन्होंने वरिष्ठ पत्रकारों का साफा पहनाकर और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया। कार्यक्रम में देवनानी ने कहा कि कलम की ताकत का वास्तविक परिचय उसके प्रभाव से मिलता है। एक समाचार किसी उपेक्षित गांव की समस्या को शासन तक पहुंचा सकता है, किसी पीड़ित के मन में न्याय की उम्मीद जगा सकता है और किसी सकारात्मक प्रयास को देशव्यापी पहचान दिला सकता है। इस अवसर पर पत्रकारिता एवं सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए अनिल लोढ़ा,, गुलाब बत्रा, महेश शर्मा, महेश झालानी, योगेश जैमन, सत्यनारायण शर्मा, सुरेंद्र जैन पारस, अजीत तिवारी, पुरुषोत्तम सैनी, जगदीश जैमन, गिरिराज जैमन, वीरेंद्र सिंह राठौड़ और राजेन्द्र हंस का सम्मान किया गया।

पंचायत चुनाव में भाजपा को आईना दिखाएंगे नतीजेः जूली

संचार जगत



जयपुर। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि पंचायत राज चुनाव को लेकर कांग्रेस पूरी तरह आश्वस्त है। उन्होंने कहा कि जब परिणाम आएंगे, तब भाजपा को अपना असली चेहरा आईने में साफ नजर आ जाएगा। उन्होंने कहा कि भाजपा चाहे कितने भी दावे करे, लेकिन जमीन पर स्थिति उसके पक्ष में नहीं है।

उन्होंने नगर निकाय चुनाव का उदाहरण देते हुए कहा कि उस चुनाव में भी भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा था। भाजपा भले ही यह दावा करती हो कि उसके चेयरमैन ज्यादा बने, लेकिन हकीकत यह है कि उस चुनाव में भाजपा का वोट प्रतिशत गिरा था, जबकि कांग्रेस का वोट प्रतिशत बढ़ा था। परिसीमन में भी कई तरह की गड़बड़ियां की गई थीं। जूली ने कहा कि वही स्थिति अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी देखने को मिल रही है।

पंचायत चुनाव में भी परिसीमन में बेईमानी की गई है, लेकिन इसके बावजूद कांग्रेस का वोट प्रतिशत बढ़ेगा और भाजपा का घटेगा, यह तय है।

उन्होंने आरोप लगाया

कि भाजपा ने चुनाव में जमकर बेईमानियां की हैं। चुनाव पुरानी मतदाता सूची से कराए गए हैं। एसआईआर लागू होने के बाद बनी नई सूची से चुनाव नहीं कराए गए। परिसीमन के दौरान भी भाजपा ने बड़े पैमाने पर गड़बड़ी की।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस को आम जनता का पूरा समर्थन मिला है और आने वाले नतीजे बहुत अच्छे होंगे। जनता ने भाजपा की कार्यशैली को समझ लिया है और अब बदलाव चाहती है।

प्रभावी एवं सुदृढ़ बनाने के लिए समस्त जोन उपायुक्तों की बैठक ली

शासन सचिव रवि जैन ने कहा सफाई व्यवस्था में लापरवाही नहीं होगी बर्दाश्त



संचार जगत

जयपुर। स्वायत्त शासन विभाग के शासन सचिव रवि जैन ने जयपुर शहर की सफाई व्यवस्था को और अधिक प्रभावी एवं सुदृढ़ बनाने के लिए समस्त जोन उपायुक्तों की बैठक ली।

बैठक में उन्होंने शहर में विभिन्न स्थानों पर बने कचरा पॉइंट्स एवं सफाई व्यवस्था में सामने आ रही लापरवाही पर गहरी नाराजगी व्यक्त करते हुए अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि शहर की स्वच्छता के प्रति किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जैन ने सभी जोन उपायुक्तों एवं मुख्य सफाई निरीक्षकों को प्रतिदिन अनिवार्य रूप से फील्ड में उतरकर अपने-अपने क्षेत्रों का निरीक्षण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी केवल कार्यालयों तक सीमित न रहें, बल्कि मौके पर जाकर सफाई व्यवस्था का जायजा लें और प्रतिदिन की निरीक्षण रिपोर्ट एवं कार्यवाही का विवरण मुख्यालय को भिजवाना सुनिश्चित करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि निर्देशों की पालना में किसी भी प्रकार की कोताही पाए जाने पर संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने दुकानदारों द्वारा दुकानों के बाहर डस्टबिन नहीं रखने पर भी सख्त रुख अपनाते हुए ऐसे प्रतिष्ठानों के विरुद्ध अधिकाधिक चालान जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण व्यवस्था को भी पूरी गंभीरता एवं नियमितता के साथ संचालित करने के निर्देश दिए।

उदयपुर जिले में युवक की हत्या करने वाले चार नाबालिग डिटेन



संचार जगत

उदयपुर। उदयपुर जिले के झाड़ोल थाना क्षेत्र में दिवाली की रात लूट की नीयत से एक युवक की निर्मम हत्या करने के मामले में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। पुलिस की विशेष टीमों ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए इस वारदात को अंजाम देने वाले चार नाबालिगों को डिटेन किया है। पुलिस ने इनके कब्जे से हत्या में प्रयुक्त चाकू, बाइक और खून से सनी शर्ट भी बरामद कर ली है। 9 नवंबर को मृतक के पिता कालूलाल कसोटिया की झाड़ोल थाने में दर्ज रिपोर्ट के अनुसार उनका बेटा भरत 8 नवंबर को अपनी बाइक लेकर झाड़ोल गया था, लेकिन देर रात तक घर नहीं लौटा। अगले दिन सुबह भरत का शव खाखोड़ स्कूल के खेल मैदान की बावड़ी के पास लहूलुहान हालत में पड़ा मिला, जबकि उसकी बाइक गांव की तरफ खड़ी पाई गई। जांच में सामने आया कि बदमाशों ने लूट की नीयत से भरत पर चाकू से ताबड़तोड़ हमला किया था, जिससे गंभीर चोट लगने के कारण उसने मौके पर ही दम तोड़ दिया।

अंतरराष्ट्रीय पुष्कर पशु मेले की रौनक परवान पर



संचार जगत

पुष्कर। पुष्कर के रेतीले धोरों में इन दिनों अंतरराष्ट्रीय पुष्कर पशु मेले की रौनक परवान पर है। मेले में केवल ऊंटों और घोड़ों की पारंपरिक खरीद-बिक्री ही नहीं हो रही, बल्कि देश-विदेश की दुर्लभ और बेशकीमती नस्ल के पशु भी मेलार्थियों और विदेशी पर्यटकों के लिए कौतूहल का केंद्र बने हुए हैं। मेले की औपचारिक प्रशासनिक शुरुआत आज झंडारोहण और पुष्कर सरोवर के 52 घाटों पर दीपदान के साथ होगी, लेकिन इससे पहले ही मेला मैदान में अनोखे पशुओं का जमघट लग चुका है। गुजरात के सूरत से पुष्कर मेले में पहुंचा मारवाड़ी नस्ल का घोड़ा 'गोल्डन किंग' सबसे ज्यादा चर्चा बटोर रहा है। इसके मालिक के मुताबिक, 5 वर्षीय इस घोड़े की कीमत 21 करोड़ रुपये है और क्रिमिनो रंग का देश में यह अपनी नस्ल का इकलौता घोड़ा है। मालिक इसे बिक्री के लिए नहीं, बल्कि केवल प्रदर्शन के लिए लाए हैं।

चुनावी रंजिश को लेकर दुकानदार पर जानलेवा हमला

संचार जगत



जोधपुर। जोधपुर के डांगियावास थाना क्षेत्र में चुनावी रंजिश के चलते एक दुकानदार और उसके परिजनों पर जानलेवा हमला करने का मामला सामने आया है। रात के समय दुकान पर काम कर रहे युवक को बातचीत के बहाने बुलाकर लोहे की रॉड और फावड़े से हमला किया गया, जिससे उसके सिर में गंभीर चोटें आई हैं। डांगियावास थाना पुलिस ने पीड़ित की लिखित रिपोर्ट पर सरपंच पति शिवप्रकाश कागट, पेशे से सरकारी शिक्षक मनोहर कागट सहित अन्य नामजद आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पीड़ित का आरोप है कि मारपीट के दौरान अशोक जाजड़ा ने उस पर और उसके भाई पर स्कॉर्पियो गाड़ी चढ़ाकर जान से मारने का भी प्रयास किया। यह पूरी घटना दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गई है। गंभीर रूप से घायल सुनील को तत्काल उपचार के लिए बनाड़ रोड स्थित श्रीराम अस्पताल में भर्ती कराया गया।

उगते सूर्य के अर्घ्य के साथ पूरा हुआ छठ पर्व

संचार जगत



नई दिल्ली। देश भर में उत्साह और उमंग के साथ छठ पूजा पर्व मनाया गया। छठ पूजा के चौथे और आखिरी दिन सोमवार सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही चार दिवसीय महापर्व पूरा हो गया। व्रतियों ने 36 घंटे का निर्जला व्रत पूरा किया।

अर्घ्य देने के लिए लोग सुबह 4 बजे से ही घाटों पर पहुंचने लगे थे। दिल्ली, यूपी, बिहार और झारखंड में गंगा-यमुना समेत अन्य नदियों-तालाबों के घाटों पर श्रद्धालुओं की भीड़ रही। दिल्ली में यमुना घाटों पर सूर्योदय के समय करीब सवा लाख लोग मौजूद थे। बिहार के मोतिहारी सेंट्रल जेल में भी कैदियों ने छठ पूजा की। इसके लिए जेल परिसर में विशेष घाट बनाया गया था, जहां 75 महिलाओं और 62 पुरुषों समेत कई कैदियों ने पूजा की। विदेशों में भी छठ पर्व आस्था के साथ मनाया गया। अमेरिका के वॉशिंगटन में पोटोमैक नदी के किनारे पूर्वांचल के लोगों ने छठ मनाया। यूपी के 4 हजार घाटों पर छठ पूजा की भीड़ रही।

बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने अपने पैतृक गांव लखनपुर में सूर्य को अर्घ्य देकर छठ पूजा की। दिल्ली में यमुना नदी के कालिंदी कुंज घाट पर छठ महापर्व के अंतिम दिन श्रद्धालुओं ने उषा अर्घ्य अर्पित किया। असम के डिब्रूगढ़ में छठ महापर्व के अंतिम दिन बारिश के बीच श्रद्धालुओं ने छठ महापर्व की पूजा-अर्चना की और ऊषा अर्घ्य अर्पित किया। भोजपुरी एक्ट्रेस अक्षरा सिंह ने भी छठ पूजा की। पुरी के नरेंद्र कोना तालाब में छठ पूजा श्रद्धापूर्वक मनाई गई। श्रद्धालु महिलाओं ने उगते सूरज को अर्घ्य दिया। असम में बोकाखात के मरिधनशिरी नदी घाट पर ब्रह्म मुहूर्त में ही श्रद्धालु नदी में उतरकर सूर्योदय तक भगवान सूर्य की आराधना करते नजर आए।

सहकारिता का मूल मंत्र मिलकर काम करना है : शीन काफ़ निज़ाम

संचार जगत



जोधपुर। राजस्थान राज्य स्काउट गाइड हेडक्वार्टर में पुष्टिकर साख सहकारी समिति लिमिटेड की 25वीं वार्षिक आमसभा आयोजित हुई। इसमें शायर और चिंतक शीन काफ़ निज़ाम ने कहा कि सहकारिता का मूल मंत्र मिलकर काम करना है। जब किसी संस्था के सदस्य उससे आत्मीयता के साथ जुड़कर काम करते हैं, तो वह संस्था नई ऊंचाइयों को छू सकती है। उन्होंने कहा कि पुष्टिकर साख सहकारी समिति लोकतांत्रिक माहौल में कार्य कर रही है, जो इसकी सफलता का महत्वपूर्ण आधार है। आमसभा में पूर्व न्यायाधीश गोपाल कृष्ण व्यास, वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. वीडी जोशी सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। गोपाल कृष्ण व्यास ने कहा कि सदस्यों के सुझावों और विश्वास के कारण ही समिति सफलता की सीढ़ियां चढ़ रही है। समिति निरंतर अपनी कमियों में सुधार करते हुए उत्कृष्ट कार्य कर रही है। उन्होंने सदस्यों से आह्वान किया कि वे समिति पर इसी तरह अपना विश्वास और सहयोग बनाए रखें। आमसभा के प्रारंभ में समिति के उपाध्यक्ष सुनील बोहरा ने वार्षिक प्रतिवेदन का पठन किया, जिसकी सदस्यों ने सर्वसम्मति से पुष्टि की। इसके पश्चात संचालक मंडल की ओर से समिति के मुख्य कार्यकारी अमरचंद पुरोहित ने गत आमसभा की कार्यवाही से सदस्यों को अवगत कराया। आमसभा में सदस्यों को 10 प्रतिशत लाभांश देने की घोषणा की गई।

स्पीकर देवनानी बोले- लोकतंत्र में असहमति का भी सम्मान, संवैधानिक संस्थाओं के प्रति श्रद्धा बनी रहनी चाहिए

मीडिया से 55 साल का संबंध, मर्यादाओं में रहकर निर्भीक और निष्पक्ष पत्रकारिता करें : देवनानी

संचार जगत



जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि उनका मीडिया से 55 सालों का संबंध है। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को मर्यादाओं में रहकर निर्भीक और निष्पक्ष पत्रकारिता करनी चाहिए।

पत्रकारिता लोकतंत्र की शक्ति है। संसद और विधानसभाओं में लिए गए निर्णयों का दस्तावेजीकरण संवैधानिक इतिहास का निर्माण करता है, वहीं पत्रकारिता उन निर्णयों के पीछे के विचारों, परिस्थितियों और जनभावनाओं को समाज के सामने सुरक्षित रखती है। पत्रकारिता लोकतंत्र के वर्तमान का चित्रण करने के साथ ही आने वाली पीढ़ियों के लिए समय का प्रमाण भी प्रस्तुत करती है। देवनानी ने कहा कि लोकतंत्र में असहमति का भी सम्मान होता है। उन्होंने कहा कि संवैधानिक संस्?थाओं के प्रति श्रद्धा बनी रहनी चाहिए। स्पीकर वासुदेव देवनानी सोमवार को विद्याधर नगर में राजस्थान पत्रकार परिषद के दीपावली स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने दीप प्रज्ज्वलन कर समारोह को शुभारम्?भ किया। देवनानी ने वरिष्ठ पत्रकारों का साफा पहनाकर व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया। देवनानी ने कहा कि कलम की ताकत का वास्तविक परिचय उसके प्रभाव से मिलता है। एक समाचार किसी उपेक्षित गांव की समस्या को शासन तक पहुंचा सकता है, किसी पीड़ित के मन में न्याय की उम्मीद जगा सकता है और किसी सकारात्मक प्रयास को देशव्यापी पहचान दिला सकता है। पत्रकारिता की सार्थकता जनहित के प्रश्नों को प्रभावी ढंग से सामने लाने और समाज को सही दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करने में निहित है। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि भारत का स्वतंत्रता आंदोलन पत्रकारिता के योगदान के बिना अधूरा है। राजा राममोहन राय, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी और गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे महान व्यक्तित्वों ने पत्रकारिता को राष्ट्रीय जागरण, जनचेतना और सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनाया। उनके विचार और लेखन आज भी पत्रकारिता की मूल प्रेरणा बने हुए हैं। देवनानी ने कहा कि संसदीय पत्रकारिता लोकतंत्र की कार्यप्रणाली को नागरिकों के निकट लाती है। सदन में होने वाली बहस, विधेयकों की भावना, जनप्रतिनिधियों के विचार और जनहित में लिए गए निर्णय जब पत्रकारिता के माध्यम से जनता तक पहुंचते हैं, तब संसदीय विमर्श व्यापक सामाजिक संवाद का हिस्सा बनता है।

संवैधानिक संस्थाओं के प्रति सम्मान, उनकी कार्यप्रणाली की समझ और लोकतांत्रिक उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। विधानसभा अध्यक्ष देवनानी ने कहा कि डिजिटल क्रांति ने पत्रकारिता के स्वरूप और गति में व्यापक परिवर्तन किया है। आज समाचार कुछ ही क्षणों में वैश्विक संवाद का हिस्सा बन जाता है। ऐसे समय में सूचना की शीघ्रता के साथ उसकी सत्यता, विश्वसनीयता और प्रमाणिकता सुनिश्चित करना और भी आवश्यक हो गया है। देवनानी ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में पत्रकार की मौलिक भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण होगी। तकनीक सूचना का विश्लेषण कर सकती है, लेकिन मानवीय संवेदना, सामाजिक संदर्भ, नैतिक विवेक और सार्वजनिक जवाबदेही पत्रकारिता के मूल आधार हैं।

उन्होंने कहा कि पत्रकारिता को समाज के सकारात्मक पक्षों को भी पर्याप्त स्थान देना चाहिए। देवनानी ने ग्रामीण पत्रकारिता को लोकतंत्र की जमीनी संवेदना बताते हुए कहा कि दूरस्थ गांवों में कार्यरत पत्रकार स्थानीय समस्याओं, किसानों की अपेक्षाओं, विकास योजनाओं की वास्तविक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासन से जुड़े विषयों को सामने लाकर लोकतांत्रिक व्यवस्था को जनसामान्य से जोड़ते हैं। महिला पत्रकारों की सहभागिता और अधिक बढ़नी चाहिए। उनकी सक्रिय भागीदारी से पत्रकारिता में नए दृष्टिकोण, व्यापक संवेदनशीलता और सामाजिक प्रश्नों की बेहतर अभिव्यक्ति सुनिश्चित होगी। कार्यक्रम को विधायक कालीचरण सराफ, मेयर सुनिल कोठारी, और परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष बलविंदर सिंह जम्मू ने भी सम्बोधित किया। राजस्थान पत्रकार परिषद के अध्यक्ष रोहित सोनी ने स्वागत किया। परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष गिरिराज अग्रवाल ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर पत्रकारिता एवं सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए अनिल लोढ़ा, गुलाब बत्रा, महेश शर्मा, महेश झालानी, योगेश जैमन, सत्यनारायण शर्मा, सुरेंद्र जैन पारस, अजीत तिवारी, पुरुषोत्तम सैनी, जगदीश जैमन, गिरिराज जैमन, वीरेंद्र सिंह राठौड़ और राजेन्द्र हंस का सम्मान किया गया।

हाईकोर्ट ने सोडाला से गुर्जर की थड़ी तक दो सप्ताह में अतिक्रमण हटाने के दिए आदेश



संचार जगत

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने राजधानी के व्यस्ततम मार्गों में से एक न्यू सांगानेर रोड पर सोडाला से गुर्जर की थड़ी तक फैले अतिक्रमण को लेकर कड़ा रुख अपनाया है। जस्टिस इंद्रजीत सिंह और जस्टिस संगीता शर्मा की खंडपीठ ने जयपुर विकास प्राधिकरण को दो सप्ताह के भीतर इस मार्ग के सभी अतिक्रमण हटाकर अदालत में पालना रिपोर्ट पेश करने के सख्त निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही अदालत ने इस कार्रवाई से प्रभावित हो रहे दुकानदारों और स्थानीय निवासियों की ओर से मामले में पक्षकार बनने के लिए दायर की गई अर्जियों को खारिज कर दिया है। पालना रिपोर्ट नहीं देने पर अधिकारियों को तलब होना होगा। हाईकोर्ट ने यह आदेश सुरेश चंद रावत और अन्य की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। मामले की अगली सुनवाई अब 7 दिसंबर को तय की गई है। खंडपीठ ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि निर्धारित दो सप्ताह में अतिक्रमण हटाकर पालना रिपोर्ट पेश नहीं की जाती है, तो संबंधित जेडीए अधिकारी व्यक्तिगत रूप से कोर्ट में उपस्थित होकर अपना स्पष्टीकरण दें।

सड़क हादसे में दंपती घायल

संचार जगत

दौसा। जिले के सदर थाना क्षेत्र अंतर्गत सैंथल रोड पर सड़क हादसे में पति-पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें तत्काल जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। बताया जा रही है कि ओवरटेकिंग के दौरान एक कार दो ट्रोलों के बीच फंसकर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। यह दुर्घटना सैंथल रोड पर मालगवास के समीप हुई। ओवरटेकिंग के दौरान एक कार अनियंत्रित होकर दो भारी ट्रोलों के बीच फंस गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार के परखच्चे उड़ गए और वह पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए आसपास के कई थानों की पुलिस भी मौके पर पहुंची और राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया। इस हादसे के कारण हाईवे पर कुछ समय के लिए यातायात भी प्रभावित रहा, जिसे पुलिस ने क्षतिग्रस्त वाहनों को हटवाकर सुचारु करवाया।



श्रीगंगानगर जिले में 3 नवंबर को ब्लास्ट केस में बरामद किए दो बम



संचार जगत

श्रीगंगानगर। श्रीगंगानगर जिले में 3 नवंबर को अनूपगढ़-सूरतगढ़ रेलवे ट्रैक पर हुए ब्लास्ट केस की जांच के दौरान पुलिस ने दो और बम बरामद किए हैं। अधिकारियों ने बताया कि इनमें से एक बम लाइव मोड में था, जबकि दूसरा डिफ्यूज मोड में मिला। अधिकारियों ने बताया कि रामसिंहपुर रेलवे स्टेशन के पास दो और बम बरामद हुए हैं। पुलिस टीम इस मामले में गिरफ्तार आरोपी महिला महकदीप कौर और देविंदर सिंह को मौके पर लेकर पहुंची थी, जहां आरोपियों ने दोनों बमों के छिपाए जाने के स्थान की जानकारी दी। इसके बाद दोनों बमों को बरामद किया गया। अधिकारी नितिन चौधरी ने बताया कि मामले में आगे की जांच और आवश्यक कार्रवाई जारी है। एटीएस के अतिरिक्त महानिदेशक दिनेश एमएन ने बताया कि यह साजिश कथित तौर पर पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के इशारे पर रची गई थी, जिसका मकसद एक यात्री ट्रेन को उड़ाना था। हालांकि, टाइमिंग में गलती के कारण विस्फोटक ट्रेन के गुजरने के लगभग 30 मिनट बाद फटा, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया।

यमुना प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट सख्त, जुर्माना लगाने की दी चेतावनी

संचार जगत



नई दिल्ली। यमुना नदी में लगातार बढ़ते प्रदूषण को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने नाराजगी जताई है। अदालत ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों पर जुर्माना लगाने की चेतावनी दी है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यमुना की सफाई पर भारी-भरकम रकम खर्च करने के बावजूद नदी में प्रदूषण कम होने के बजाय बढ़ा है। नदी के किनारे बसे शहरों, कस्बों और गांवों के नगर प्रशासन की नाकामी यमुना की खराब हालत में दिखाई देती है। कोर्ट ने कहा कि यमुना में गंदा पानी छोड़ने वाले 520 नालों की स्थिति भी नदी की खराब सेहत को दर्शाती है। जस्टिस मनोज मिश्रा और जस्टिस मनमोहन की बेंच ने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को निर्देश दिया कि हर राज्य, केंद्र शासित प्रदेश और जिले में यमुना और प्रमुख नालों के प्रवेश और निकास बिंदुओं पर पानी की गुणवत्ता की निगरानी करे। कोर्ट ने चेतावनी दी कि यदि किसी राज्य, केंद्र शासित प्रदेश या जिले से गुजरने के दौरान पानी की गुणवत्ता खराब होती है तो संबंधित प्रशासन को जवाबदेह ठहराया जाएगा और जुर्माना लगाया जाएगा। सीपीसीबी को मुआवजे की गणना का फॉर्मूला सुझाने का निर्देश दिया गया है।

मेडिकल कॉलेजों में रैगिंग की घटनाओं पर चिकित्सा मंत्री सख्त

संचार जगत



जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने प्रदेश के मेडिकल कॉलेजों में रैगिंग की बढ़ती घटनाओं पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए स्पष्ट किया है कि विद्यार्थियों के साथ रैगिंग, दुर्व्यवहार और किसी भी प्रकार का मानसिक अथवा शारीरिक उत्पीड़न किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मेडिकल कॉलेजों में रैगिंग के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाए और दोषी विद्यार्थियों के साथ-साथ लापरवाही बरतने वाले संस्थान के जिम्मेदार अधिकारियों के विरुद्ध भी नियमानुसार सख्त कार्रवाई की जाए। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि मेडिकल कॉलेज शिक्षा और संस्कार के केंद्र हैं। यहां विद्यार्थियों को सुरक्षित, सम्मानजनक और भयमुक्त वातावरण उपलब्ध कराना संस्थान प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। वरिष्ठ विद्यार्थियों द्वारा कनिष्ठ विद्यार्थियों को प्रताड़ित करना, उन पर अनुचित दबाव बनाना, देर रात तक जगाना, जबरन गतिविधियां करवाना अथवा किसी भी प्रकार से अपमानित करना गंभीर अनुशासनहीनता है। ऐसी घटनाओं को किसी भी स्तर पर नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। उन्होंने चिकित्सा शिक्षा विभाग एवं राजस्थान मेडिकल एजुकेशन सोसायटी के अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी राजकीय एवं निजी मेडिकल कॉलेजों में जारी एंटी रैगिंग एक्शन प्लान की अक्षरशः पालना सुनिश्चित की जाए। कॉलेज प्रशासन रैगिंग की प्रत्येक शिकायत को गंभीरता से लेते हुए तत्काल निष्पक्ष जांच और नियमानुसार कार्रवाई करे। उन्होंने सभी मेडिकल कॉलेजों को निर्देश दिए कि कॉलेज परिसर, छात्रावासों एवं अन्य संवेदनशील स्थानों के सीसीटीवी कैमरों की नियमित निगरानी की जाए। चिकित्सा मंत्री ने स्पष्ट किया कि भविष्य में रैगिंग की कोई घटना सामने आती है और जांच में संस्थान प्रशासन की लापरवाही अथवा उदासीनता पाई जाती है, तो संबंधित कॉलेज प्रशासन को जिम्मेदार माना जाएगा। ऐसे मामलों में नियमानुसार कठोर दंडात्मक एवं अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के घर पर पार्टी बैठक हुई

राहुल गांधी उत्तरप्रदेश में सीटों का बंटवारा चाहते हैं सम्मानजनक तरीके से

संचार जगत



नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश की 403 विधानसभा सीटों पर अगले साल होने वाले चुनाव को लेकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के घर पर पार्टी बैठक हुई। बैठक में राहुल गांधी ने कहा कि सपा हमारी महत्वपूर्ण सहयोगी है। सीटों का बंटवारा सम्मानजनक तरीके से होना चाहिए। सबको साथ लेकर चलना होगा। बैठक में सपा से सीट शेयरिंग पर चर्चा करने के लिए कमेटी बनाई गई है। इसे प्रियंका गांधी लीड करेंगी। कमेटी में केसी वेणुगोपाल, यूपी प्रदेश अध्यक्ष आराधना मिश्रा, यूपी प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम, यूपी के वर्किंग प्रेसिडेंट इमरान मसूद शामिल हैं। कांग्रेस ने सपा को करीब 181 विधानसभा सीटों की सूची सौंपी है। कांग्रेस ने ग्राउंड रिपोर्ट के आधार पर दावा किया कि इन इलाकों में उसकी स्थिति मजबूत है। पिछले कुछ महीनों में उसके पक्ष में माहौल बदला है। कांग्रेस की इस मांग को लेकर सपा में असमंजस है। इसकी वजह 2022 के विधानसभा चुनाव के नतीजे हैं। उस चुनाव में कांग्रेस को सिर्फ 2.33प्रतिशत वोट मिले थे और पार्टी केवल 2 सीटें जीत सकी थी। सीट बंटवारे को लेकर सपा और कांग्रेस के बीच आज लखनऊ में औपचारिक बैठक होगी। इसमें दोनों पार्टियों के वरिष्ठ नेता शामिल होंगे। दोनों दलों की कमेटियां एक-एक सीट पर जीत की संभावनाओं के आधार पर चर्चा करेंगी। सपा प्रमुख अखिलेश यादव पहले ही साफ कर चुके हैं कि गठबंधन में सीटों का बंटवारा जीतने की क्षमता के आधार पर होगा। दोनों दलों की बातचीत पूरी होने के बाद सीटों को लेकर अंतिम फैसला शीर्ष नेतृत्व करेगा।

कैबिनेट सचिवालय तक पहुंची नौकरशाहों की शिकायत

संचार जगत



जयपुर। राजस्थान की नौकरशाही में जनता से संवादहीनता का एक गंभीर मामला अब केंद्र सरकार के मंत्रिमंडल सचिवालय तक पहुंच गया है। सीएमओ के दो वरिष्ठ आईएएस अधिकारियों के खिलाफ केंद्र ने मुख्य सचिव को पत्र भेजा है। मामला राजस्थान कैडर के दो वरिष्ठ आईएएस अधिकारियों मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव अखिल अरोड़ा और मुख्यमंत्री के संयुक्त सचिव उत्सव कौशल से जुड़ा है।

चर्चित कौशिक नामक शिकायतकर्ता ने केंद्र सरकार को दो अलग-अलग अभ्यावेदन भेजकर आरोप लगाया है कि जब आम नागरिक जनहित और शासन से जुड़े मुद्दों को लेकर व्हाट्सएप या अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर इन दोनों अधिकारियों से संपर्क करते हैं, तो वे संवाद करने के बजाय नागरिकों के मोबाइल नंबर ब्लॉक कर देते हैं। केंद्र सरकार के मंत्रिमंडल सचिवालय ने इन शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए राजस्थान के मुख्य सचिव को आधिकारिक पत्र भेजा है। केंद्र के अवर सचिव राहुल कुमार सिन्हा द्वारा भेजे गए इस पत्र में 3 जून अखिल अरोड़ा से संबंधित और 15 जून उत्सव कौशल से संबंधित दोनों मूल शिकायतों को संलग्न करते हुए नियमानुसार समुचित कार्रवाई करने को कहा गया है।

वित्त मंत्री ने अर्थशास्त्रियों के साथ की पहली प्री-बजट बैठक

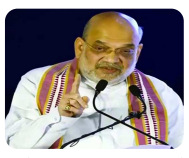
संचार जगत



नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने केंद्रीय बजट 2027-28 की तैयारियों के तहत देश के प्रमुख अर्थशास्त्रियों के साथ पहली प्री-बजट परामर्श बैठक की, जिसका उद्देश्य आगामी बजट के लिए विशेषज्ञों से सुझाव प्राप्त करना और आर्थिक प्राथमिकताओं पर व्यापक चर्चा करना था। बैठक में आर्थिक मामलों के विभाग की सचिव अनुराधा ठाकुर, भारत सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार वी. अनंत नागेश्वरन तथा आर्थिक मामलों के विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल हुए। वित्त मंत्रालय पहले से ही बजट 2027-28 के लिए विभिन्न उद्योग संगठनों और हितधारकों के साथ परामर्श बैठकों की शृंखला चला रहा है। इन बैठकों का उद्देश्य उद्योग जगत, व्यापार समुदाय और आर्थिक विशेषज्ञों से सुझाव लेकर बजट को अधिक प्रभावी और विकासोन्मुख बनाना है। हाल ही में उद्योग मंडल पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ने सरकार को सीमा शुल्क सुधारों से जुड़ी कई महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत की थीं। संगठन का कहना है कि इन सुधारों से भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने में मदद मिलेगी।

अमित शाह ने अजित पवार के महायुति में शामिल होने खोला राज

संचार जगत



पुणे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पुणे में महाराष्ट्र के पूर्व डिप्टी सीएम अजित पवार की प्रतिमा के अनावरण समारोह में शामिल हुए। इस दौरान शाह ने उनसे जुड़े अपने लगाव और उनके कार्यशैली पर विस्तार से बात की। उन्होंने इस दौरान यह भी बताया कि आखिर क्यों अजित दादा महायुति में शामिल हुए।

इसी बीच, अजीत पवार के महायुति में शामिल होने के राज को खोलते हुए अमित शाह ने कहा कि जब उन्हें पता चला कि वह महायुति में शामिल होना चाहते हैं तो मुझे हैरानी हुई। मैंने उनसे कहा कि आपके इस फैसले से सभी को झटका लगेगा। तब उन्होंने मुझसे कहा कि अमित भाई हर चीज का एक कालखंड होता है और जब से नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने हैं, देश विकास की नई राह पर है। मैं महाराष्ट्र और देश के विकास के साथ जुड़ना चाहता हूं इसीलिए महायुति में शामिल होना चाहता हूं। अमित शाह ने कहा कि इस घटना के बाद से मेरा उनका रिश्ता काफी घनिष्ठ हो गया। अमित शाह ने कहा 'दादा' का अचानक और असामयिक निधन एक ऐसी क्षति है जिसकी भरपाई कभी नहीं हो सकती। विशेष रूप से पुणे, बारामती, पिंपरी और चिंचवड़ क्षेत्रों के लिए। मुझे नहीं लगता कि अजित दादा के अचानक चले जाने से जो खालीपन पैदा हुआ है, उसे कभी भरा जा सकेगा। दशकों तक किए गए सामूहिक प्रयासों से भी, जो खो गया है उसकी भरपाई करना असंभव लगता है। यह पूरे क्षेत्र और वास्तव में पूरे महाराष्ट्र के लिए एक बहुत बड़ी और अपूरणीय क्षति है। व्यक्तिगत स्तर पर भी यह मेरे लिए एक ऐसी क्षति है जिसकी भरपाई नहीं हो सकती, अजित दादा सिर्फ एक करीबी दोस्त ही नहीं बल्कि एक सच्चे सहयोगी भी थे।

हमने अचानक एक जननेता को खो दिया है, एक ऐसा व्यक्ति जिसे विकास की गहरी समझ थी और जिसे पंचायती राज, सहकारिता, कृषि और आधुनिक शहरी विकास जैसे क्षेत्रों का व्यापक अनुभव था। वे एक ऐसे नेता थे जिनके पास दूरदर्शिता और एक स्पष्ट विजन था। अमित शाह ने कहा कि उनका व्यक्तित्व इतना जीवंत और सकारात्मक था कि आज भी अगर मैं अपनी आंखें बंद करूं, तो मुझे अजित दादा बिल्कुल अपने सामने खड़े दिखाई देते हैं।

सचिव द्वारा जिले में इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाने पर चर्चा की गई

जिला क्रिकेट संघ की नई कार्यकारिणी का गठन



संचार जगत

दौसा। जिला क्रिकेट संघ के चुनाव होटल केशव पैलेस महुआ में संपन्न हुए। कार्यकारिणी में अध्यक्ष शोभना गुर्जर, सचिव बृजकिशोर उपाध्याय कोषाध्यक्ष अशोक कुमार, उपाध्यक्ष रतनचंद शर्मा, शिवचरण शर्मा, हीरालाल सेन और गणेश दत्त शर्मा, संयुक्त सचिव शशिकांत शर्मा, यतेश कुमार, पवन कुमार, रविकांत कटारा, आयोजन सचिव जयप्रकाश शर्मा, कार्यकारिणी सदस्य रणवीर सिंह गुर्जर, स्वतंत्र कुमार सैन, रामकेश शर्मा, गिरधारी सिंघल, केशव गुर्जर, विकाश कुमार, अमित कुमार, इन्द्राज गुर्जर, लक्ष्मण सिंह गुर्जर चुने गए। सचिव बृज किशोर उपाध्याय ने बताया कि इस चुनाव के लिए राजस्थान क्रिकेट संघ के आब्जर्वर देवाराम चौधरी, जिला खेल अधिकारी ऑब्जर्वर कजोड़मल एवं उप रजिस्ट्रार सहकारी समितियां दौसा से विमलेश कुमार सैनी चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित हुए। इनकी निगरानी में सभी पदाधिकारियों का निर्विरोध निर्वाचन हुआ। बृज किशोर उपाध्याय द्वारा अपने कार्यकाल के दौरान किए गए खेल संबंधित विवरण, पुराने लेखा जोखा ऑडिट और पिछली आमसभा के एजेंडों का अनुमोदन सर्वसम्मति से किया गया। सचिव द्वारा जिले में इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाने और दौसा जिले के खिलाड़ियों को और आगे बढ़ाने पर भी चर्चा की गई।

दो पक्षों के संघर्ष में युवक की मौत, 10 आरोपी गिरफ्तार

संचार जगत

धौलपुर। जिले के बारोली गांव में पंचायत चुनाव के प्रचार के दौरान दो पक्षों के बीच हुए विवाद ने खूनी संघर्ष का रूप ले लिया। इस दौरान हुई फायरिंग में 34 वर्षीय युवक पीतम की गोली लगने से मौत हो गई, जबकि दोनों पक्षों के कई लोग घायल हो गए। घटना के बाद गांव में तनाव की स्थिति बन गई, जिसे देखते हुए पुलिस ने भारी पुलिस बल तैनात कर दिया है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी समेत 10 लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। यह घटना बारोली गांव की है जहां दो पक्षों के बीच हुआ लड़ाई-झगड़ा देखते ही देखते फायरिंग तक पहुंच गया। इस गोलीबारी में एक युवक की मौत हो गई और कई अन्य लोग घायल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रण में लिया।

स्वामित्व, प्रकाशक एवं संपादक : अवंतिका राठौड़ - पी.के. प्रिंटर्स एंड स्टेशनर्स, 31, राम मंदिर के पास, पटेल नगर, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। कार्यालय : जे-17, रमेश मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर। संपर्क : 0141 463 7668
ई-मेल : sancharjagat@gmail.com| आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/55262 समाचार चयन के लिए पीआरबी अधिनियम के तहत जिम्मेदार। न्यायाधिकार क्षेत्र : जयपुर महानगर।